यह संसार

1. परमेश्वर ने यह संसार बनाया **दिन 1**

[कुलुस्सियों 1:16]

क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।

जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। (प्रेरितों के कार्य 17:24)

"संसार" इस शब्द का का प्रयोग अधिकतर नकारात्मक संदर्भ में किया जाता है। कल्पना कीजिए, समस्त सृष्टि की रचना के बाद परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा था। विभिन रंगो, आकर्तियों के बारे में सोचें, विभिन्न प्रकार के पशु,पक्षियों, फलों, सब्जियों, फूलों के बारे में सोचें ... क्या यह सुंदर नहीं है?

अनुप्रयोग

परमेश्वर द्वारा रचाई गयी खूबसूरत सृष्टि की प्रशंसा करने के लिए समय निकालें। परमेश्वर को बताएं कि आप किस प्रकार उनके द्वारा बनाये गए पशु पक्षियों**,** फलों**,** सब्जियों**,** फूलों की प्रशंसा करते हैं।

2. परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया **दिन 2**

[यूहन्ना 3:16-18]

16 *क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।*
17 *परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।* ***18*** *जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।*

परमेश्वर जगत से प्रेम करते हैं। वह नहीं चाहते कि यह सुंदर संसार भ्रष्ट हो जाए । वह संसार पर दंड की आज्ञा नहीं देना चाहते । वह संसार को बचाना चाहता था। बार-बार परमेश्वर ने संसार को बचाने के कई लोगों के माध्यम से अपना वचन भेजा। फिर भी संसार भ्रष्ट होता गया। परमेश्वर ने संसार को बचाने के लिए अपने इकलौते पुत्र को भेजा। वह संसार से इस हद तक प्रेम करते हैं।

अनुप्रयोग

परमेश्वर के प्रेम के लिए उन्हें धन्यवाद दें। परमेश्वर को बताएं कि यीशु के द्वारा उनके प्रेम से आपने क्या अंतर अनुभव किया है।

3. यीशु जगत की ज्योति हैं दिन 3

यूहन्ना 8:12-13
12 तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु
जीवन की ज्योति पाएगा।
13 फरीसियों ने उस से कहा; तू अपनी गवाही आप देता है; तेरी गवाही ठीक नहीं।

यीशु अपनी तुलना उगते हुए सूरज से कर रहे थे (तब सूर्य उदय हो रहा था, वचन 2)। यहूदियों के लिए, सूर्य यहोवा परमेश्वर का प्रतीक था (भजन 84:11)। यीशु इस जगत की ज्योति हैं, जैसे हमारी आकाशगंगा के लिए सूर्य है। सूर्य जीवन का केंद्र और स्रोत है। अगर हम सूर्य का अनुसरण करें, तो हम कभी भी अंधकार में नहीं चलेंगे। क्या आपको लगता है कि यीशु की गवाही मान्य है? यीशु के जगत की ज्योति होने के बारे में आपके क्या विचार हैं?

अनुप्रयोग
उस दिन के बारे में सोचें जब आपने यीशु को प्रभु के रूप में स्वीकार किया था और कैसे यह आपको अंधकार से ज्योति की ओर ले आया। इस माध्यम से प्रार्थना करें ।

4. ज्योति जगत में आई है दिन 4

यूहन्ना 3:19-21
19 और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक
प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे।
20 क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि
उसके कामों पर दोष लगाया जाए।
21 परन्तु जो सच्चाई पर चलता है वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों, कि वह परमेश्वर की
ओर से किए गए हैं।

लोगो को क्या पसंद हैं - ज्योति या अंधकार? अंधकार

क्यों? उनके कर्म बुरे हैं।

ज्योति से कौन नफरत करता है? हर वह व्यक्ति जो बुरा करता है।

लोग ज्योति में क्यों नहीं आते? इस डर से कि उनके दुष्ट कर्म उजागर हो जाएँगे।

ज्योति में कौन आएगा? जो कोई सत्य के अनुसार जीवन जीता है।

अनुप्रयोग
आज हमें क्या पसंद है - ज्योति या अंधकार? क्यों? परमेश्वर से इस विषय में बात करें।

5. संसार ने यीशु को नहीं पहचाना — दिन 5

यूहन्ना 1:9-11

9 सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी।
10 वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना।
11 वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।

जब हम पढ़ते यह हैं, "जगत ने उसे नहीं पहचाना" तो इसका क्या अर्थ है?

जब आपको कोई नहीं पहचाने तो आपको कैसा लगता है?

कोई यह कैसे कह सकता है कि वह यीशु को पहचानता है?

अनुप्रयोग
आप यीशु को कैसे पहचानना चाहते हैं? यीशु से बात करें ।

6. इसका प्रचार सारे जगत में किया जाएगा — दिन 6

मत्ती 24:12-14

12 और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा।
13 परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।
14 और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा॥

अधिकांश लोगों का प्रेम ठंडा क्यों पड़ जाएगा? हमारे जीवन में क्या बढ़ रहा है, दुष्टता या भक्ति ?

क्या हमारे पास अपनी मृत्यु तक दृढ़ रहने का निर्णय है? यदि हम निर्णय नहीं लेते हैं, तो दृढ़ न रहने की संभावना बहुत अधिक है। आपको क्या लगता है कि सुसमाचार का प्रचार पूरे जगत में कैसे किया जाएगा?

अनुप्रयोग

आप सुसमाचार का प्रचार कैसे करना चाहते हैं? इस विषय में योजना बनाएं।

7. यह जगत के आदि से ही तैयार है — दिन 7

मत्ती 25:34-36

34 *तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।*
35 *क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं पर देशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया।*
36 *मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए।*

सृष्टि की रचना के दौरान क्या तैयार किया गया था?

यह किसके लिए तैयार किया गया था?

जब आप 'उत्तराधिकारी' शब्द के बारे में सोचते हैं तो आपके मन में क्या विचार आता है ?

अनुप्रयोग

वचन 35-36 के आधारित कुछ कार्य करें

8. संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं — दिन 8

लूका : 12 :29-31
29 *और तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और न सन्देह करो।*
30 *क्योंकि संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं: और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है।*
31 *परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुऐं भी तुम्हें मिल जाएंगी।*

इस वचन से हमें जो आश्वासन मिलता है वह यह है कि हमारा पिता जानता है कि हमें क्या चाहिए, और वह हमें प्रदान करता रहा है तथा भविष्य में भी प्रदान करेगा।

यदि सांसारिक जातियां इन सभी चीजों के पीछे भागती है, तो हमें किसके पीछे दौड़ना चाहिए?

यदि हमे अपने मन को इन बातों की खोज में नहीं लगाना है कि हम क्या खाएँगे या क्या पीएँगे, तो हमें बातों पर अपना मन लगाना चाहिए?

अनुप्रयोग

उसके राज्य की खोज करने से आपका क्या मतलब है? इससे सम्बंधित कुछ कीजिये ।

9. ऐसी बातों के कारण संसार पर हाय है — दिन 9

मत्ती : 18 :6-7
***6** पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे समुद्र में डुबाया जाता।*
***7** ठोकरों के कारण संसार पर हाय! ठोकरों का लगना अवश्य है; पर हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा ठोकर लगती है।*

आपके मन में ऐसी कौन-सी बातें आती हैं जो लोगों को ठोकर खाने पर मजबूर कर देती हैं? क्या हम इसे रोक सकते हैं? पवित्र शास्त्र कहता है कि ऐसी बातें ज़रूर होगी।

हमें इस तरह की बातों को संसार में और विशेषकर विश्वासियों के परिवार में लाने का कारण बिलकुल भी नहीं बनना चाहिए ।

अनुप्रयोग

अपने इर्द गिर्द उन चीजों की सूची बनाइए जो लोगों के ठोकर खाने का कारण बनती हैं और प्रार्थना कीजिए कि परमेश्वर उन्हें छू लें।

10. सारे जगत को प्राप्त करने का क्या लाभ ? — दिन 10

मत्ती : 16 :26-27
***26** यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?*
***27** मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।*

आप इन दो वाक्यांशों के बारे में क्या सोचते हैं 'सारे जगत को प्राप्त करे' और 'अपने प्राण की हानि उठाये'?

आपके विचार से लोग अपनी आत्मा के बदले में क्या दे सकते हैं?

परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार कब पुरस्कृत करेंगे?

अनुप्रयोग

आपने आप को जांचिए यह देखने के लिए के आप विशवास में हो कि नहीं ? अपने आप को परखो। (2 कुरिन्थियों 13:5)

11. वह रोटी जो जगत को जीवन देती है **दिन 11**

यूहन्ना : 6 :33, 51
33 *क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।*
51 *जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा मांस है।*

मन्ना यहूदियों के लिए एक रहस्यमय चीज थी। यीशु उन लोगों के लिए एक रहस्य थे जिन्होंने यीशु को देखा था। मन्ना स्वर्ग से रात के समय में आया, और यीशु इस धरती पर तब आए जब पापी नैतिक और आत्मिक अन्धकार में थे।

मन्ना विद्रोही लोगों को दिया गया था; यह परमेश्वर का अनुग्रहपूर्ण उपहार था। उन्हें केवल झुककर मन्ना उठाना था। अगर वे उसे उठाने में असफल रहे, तो उसे रोंदते हुए आगे बढ़ जाना होता था ।

प्रभु किसी भी पापी से दूर नहीं है। सभी पापी को खुद को विनम्र करना है और उपहार (रोटी) लेना है जो परमेश्वर प्रदान करते है।

अनुप्रयोग
जगत को जीवन देने वाली यह रोटी आपको कितनी पसंद है? क्या परमेश्वर कहेंगे कि आप उसे पसंद करते हैं?

12. वह राज्य इस जगत का नहीं **दिन 12**

यूहन्ना : 18 :36
36 *यीशु ने उत्तर दिया, कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं।*

"इस जगत का" से हमें यह समझना है कि उसके राज्य की प्रकृति और उत्पत्ति इस संसार की नहीं है, न कि यह कि उसका राज्य इस संसार में विस्तारित नहीं होगा।

यीशु के राज्य का आरम्भ स्वर्ग से होता है। यीशु के राज्य की नींव शांति है; वरना, उसके सेवक लड़ते ही रहते। स्वर्गीय राज्य, जिसकी मिसाल यीशु और क्रूस है, वह प्रेम, त्याग, विनम्रता और धार्मिकता पर आधारित है और जो की यहूदियों के लिए ठोकर का कारण है और अन्यजातियों के लिए मूर्खता है।

अनुप्रयोग

स्वर्गीय राज्य, जिसकी मिसाल यीशु और क्रूस है, वह प्रेम, त्याग, विनम्रता और धार्मिकता पर आधारित है और जो की यहूदियों के लिए ठोकर का कारण है और अन्यजातियों के लिए मूर्खता है।

13. परमेश्वर जगत का न्याय करेगा — दिन 13

प्रेरितों के कार्य : 17 :30-31
30 इसलिये परमेश्वर आज्ञानता के समयों में अनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।
31 क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रामाणित कर दी है॥

सदियों से, परमेश्वर मनुष्य के पाप और अज्ञानता के प्रति सहनशील रहे हैं । इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य निर्दोष थे ही नहीं, बल्कि इसका मतलब केवल इतना है कि परमेश्वर ने द्रिव्य क्रोध को रोक रखा था। नियत समय में, परमेश्वर ने एक उद्धारकर्ता भेजा, और अब वह सभी मनुष्यों को अपने उनके मूर्खतापूर्ण तरीकों से पश्चाताप करने की आज्ञा देता है। और वह संसार का न्याय करने के लिए लौट आएगा।
इस संदेश के प्रति तीन अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ थीं।

1. कुछ लोग हँसे और मज़ाक उड़ाया और पौलुस के संदेश को गंभीरता से नहीं लिया।
2. कुछ लोग रुचि रखते थे लेकिन और अधिक सुनना चाहते थे।
3. एक छोटे से समूह ने पौलुस के प्रचार को स्वीकार किया , यीशु मसीह में विश्वास किया, और बचाये गए ।

अनुप्रयोग
जब हम इस कथन के बारे में सोचते हैं, "परमेश्वर संसार का न्याय करेगा," तो हमारे मन में क्या चलता है**?"**।

14. तुम्हें संसार में से चुना गया है — दिन 14

यूहन्नाः 15 :18-19
18 यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उस ने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा।
19 यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, वरन मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसी लिये संसार तुम से बैर रखता है।

जब हमने मसीह पर विश्वास किया, तो हम एक नई आत्मिक स्थिति में चले गए: अब हम "मसीह में" हैं और "संसार से बाहर हैं।" निश्चित रूप से, हम शारीरिक रूप से संसार में हैं, लेकिन आत्मिक रूप से संसार के नहीं हैं।

अब जबकि हम "स्वर्गीय बुलाहट के भागीदार" हैं (इब्रानियों **3:1)**, हमें अब इस संसार में पाप के धन या अभिलाषा में कोई दिलचस्पी नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम वास्तविकता से अलग-थलग हैं या संसार की ज़रूरतों से अलग-थलग हैं, या इसलिए "स्वर्गीय सोच रखते हैं कि हम सांसारिक रूप से कुशल नहीं हैं।" बल्कि, इसका मतलब है कि हम संसार की चीज़ों को स्वर्ग के नज़रिए से देखते हैं।

अनुप्रयोग

क्या संसार आपसे प्रेम करता है या आपसे बैर रखती है **?** क्यों**?**

15. इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय मानो दिन 15

यूहन्ना: 12 :24-25
24 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।
25 जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है; वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करेगा।

यीशु मसीह ने बीज की छवि का दृष्टान्त इस महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सत्य को दर्शाने के लिए किया कि बिना कष्ट के कोई महिमा नहीं हो सकती, बिना मृत्यु के कोई फलदायी जीवन नहीं हो सकता और बिना समर्पण के कोई विजय हासिल नहीं हो सकती। अपने आप में, एक बीज अपने आप में, कमज़ोर और बेकार होता है, लेकिन जब इसे बोया जाता है, तो यह "मर जाता है" और फलवन्त बन जाता है।

जब बीज "मरता है" और अपना उद्देश्य पूरा करता है, तो उसमें सुंदरता और समृद्धि दोनों होती है। अगर बीज बोल सकता, तो वह निःसंदेह ठंडी, अंधेरी धरती में डाले जाने पर शिकायत करता। लेकिन वह अपना लक्ष्य तभी प्राप्त कर सकता है, जब उसे बोया जाए।

अनुप्रयोग

जब हम इस सांसारिक जीवन से घृणा करने के बारे में सोचते हैं तो हमारे मन में क्या चलता है**?**

16. इस संसार के सदृश न बनो दिन 16

रोमियो: 12 :1-2
इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।
2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥

हम अपने शरीर को एक जीवित बलिदान के रूप में कैसे पेश कर सकते हैं? क्या इसका सम्बन्ध इस संसार के सदृश्य न बनने से है?

इन दो शब्दों के बारे में सोचें, सदृश्य और रूपांतरण । अगर हम अपने व्यक्तिगत जीवन की बात करते हैं, तो हम किस दिशा में जा रहे हैं, सदृश्य या रूपांतरण? अपने मिनिस्ट्री के बारे में क्या कहेंगे या हमारे कलीसिया के बारे में क्या कहेंगे ?

अनुप्रयोग

आखिरी बार कब हमारा मन नवीनीकृत हुआ था ? उस समय हमें किस चीज़ ने बदला था ?

17. संसार से प्रेम मत रखो — दिन 17

1 यूहन्ना: 2 :15-17

15 तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है।

16 क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।

सांसारिकता न केवल परमेश्वर के प्रेम के प्रति आपकी प्रतिक्रिया को प्रभावित करती है; यह परमेश्वर की इच्छा के प्रति आपकी प्रतिक्रिया को भी प्रभावित करती है।

जब आप इन दो कारकों को एक साथ रखते हैं, तो आपके पास सांसारिकता की एक व्यावहारिक परिभाषा होती है: एक मसीही के जीवन में ऐसी कोई भी बात जो उसे पिता के प्रेम का आनंद लेने से वंचित करती है या पिता की इच्छा पूरी करने की उसकी इच्छा को नष्ट कर देती है, वह सांसारिक है और उससे हमे बचना चाहिए।

पिता के प्रेम के प्रति प्रत्युत्तर देना (आपका व्यक्तिगत भक्तिमय जीवन) और पिता की इच्छा को पूरा करना (आपका दैनिक आचरण) - ये दोनों ही सांसारिकता की परीक्षा की कसौटियाँ हैं। ।

अनुप्रयोग

आज हम पिता के प्रेम का कितना आनंद लेते हैं, और हमें परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने से क्या रोकता है?

18. अपने आप को संसार के भ्रष्टाचार से निष्कलंक रखें॥ — दिन 18

याकूब: 1 :26-27

26 यदि कोई अपने आप को भक्त समझे, और अपनी जीभ पर लगाम न दे, पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उस की भक्ति व्यर्थ है।

27 हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें॥

वास्तविक धर्म केवल वचनो को सुनकर नहीं दिखाया जाता, बल्कि उनका पालन करके दिखाया जाता है। परमेश्वर के साथ हमारा चलना व्यर्थ है अगर यह हमारे जीवन में और जिस प्रकार का बर्ताव हम औरों के साथ करते है उसमे प्रकट नहीं होता।

परमेश्वर के साथ वास्तविक रूप से चलना सरल और व्यावहारिक तरीकों से खुद को प्रकट करता है। यह जरूरतमंदों की सहायता करता है और संसार के भ्रष्टाचार से खुद को निष्कलंक रखता है।

अनुप्रयोग

जरूरतमंदों की सहायता करने के लिए और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए समय निकालें

19. संसार से मित्रता करने का अर्थ है परमेश्वर से बैर करना — दिन 19

याकूब: 4 :4-6
4 हे व्यभिचारिणयों, क्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।
5 क्या तुम यह समझते हो, कि पवित्र शास्त्र व्यर्थ कहता है जिस आत्मा को उस ने हमारे भीतर बसाया है, क्या वह ऐसी लालसा करता है, जिस का प्रतिफल डाह हो?
6 वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है, कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।

संसार के साथ मित्रता करने की तुलना व्यभिचार से किया गया है। विश्वासियों का विवाह यीशु मसीह के साथ हुआ है (रोमियों **7:4**) और हमे उसके प्रति वफ़ादार होना चाहिए। यहूदी ईसाई जो इस पत्र को पढ़ते हैं, वे "आध्यात्मिक व्यभिचार" की इस तस्वीर को समझेंगे क्योंकि भविष्यद्वक्ता यहेजकेल, यिर्मयाह और होशे ने यहूदा को उसके पापों के लिए फटकारते समय इसका इस्तेमाल किया था। अन्य राष्ट्रों के पापी तोर तरीकों को अपनाकर और उनके देवी देवताओं की पूजा करके, यहूदा राष्ट्र ने अपने परमेश्वर के विरुद्ध व्यभिचार किया।

संसार परमेश्वर का शत्रु है, और जो संसार का मित्र बनना चाहता है, वह परमेश्वर का मित्र नहीं हो सकता। और यदि वह शरीर के अनुसार जीवन व्यतीत करता है, तब भी वह परमेश्वर का मित्र नहीं हो सकता।

अनुप्रयोग

क्या हम परमेश्‍वर के मित्र हैं? परमेश्‍वर के बेहतर मित्र बनने के लिए हम और क्या कर सकते हैं?

20. संसार के भ्रष्टाचार से बचो — दिन 20

2 पतरस: 1 :3-4
3 क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिस ने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है।
4 जिन के द्वारा उस ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूट कर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।

क्या हमें भ्रष्टाचार पसंद है**?** क्या हम भ्रष्टाचार से बचना चाहते हैं**?** भ्रष्टाचार के कारण क्या है**?**

क्या है जो भ्रष्टाचार से बचने में हमारी मदद कर सकता है**?** परमेश्वर ने हमें धार्मिक जीवन जीने के लिए क्या दिया है**?**

अनुप्रयोग
वह कौन सी आज बुरी इच्छाएं हैं जिनसे हम आज जूझ रहे हैं? परमेश्वर के कुछ वायदों की सूची बनाएँ जो हमें उन इच्छाओं से निपटने में हमारी मदद कर सकते हैं।

21. संसार पर विजय पाओ   दिन 21

1 यूहन्ना: 5 :3-5

3 और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं।
4 क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।
5 संसार पर जय पाने वाला कौन है केवल वह जिस का यह विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है।

पवित्र शास्त्र के प्रति हमारा व्यक्तिगत रवैय्या हमारे परिपक्व होते प्रेम की परख है, क्योंकि पवित्र शास्त्र में हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को प्रकट होते देख पाते हैं। एक अविश्वासी व्यक्ति पवित्र शास्त्र को एक असंभव पुस्तक मानता है, मुख्यतः इसलिए क्योंकि वह इसके आत्मिक संदेश को नहीं समझता।

एक अपरिपक्व मसीह पवित्र शास्त्र की अपकेशाओं को बोझिल मानता है। वह कुछ हद तक एक छोटे बच्चे की तरह है जो आज्ञा पालन करना सीख रहा है और जो पूछता है, "मुझे ऐसा क्यों करना है?" या "क्या ऐसा करना बेहतर नहीं होगा?"" लेकिन एक मसीही जो परमेश्वर के परिपूर्ण प्रेम का अनुभव करता है, वह खुद को परमेश्वर के वचन का आनंद लेते हुए पाता है और वास्तव में उससे प्रेम करता है।

अनुप्रयोग
पवित्र शास्त्र वह कौन सी आज्ञाएं हैं जिन्हे लोग बोझिल मानते हैं? "संसार पर विजय पाने" से आपका क्या मतलब है?

22. सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।   दिन 22

1 यूहन्ना: 5 :18-20

18 हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है: और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।
19 हम जानते हैं, कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।
20 और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

तो फिर एक विश्वासी पाप करने से कैसे बचता है? यीशु मसीह विश्वासी को बचाता है ताकि शत्रु उस पर अपना हाथ न डाल सके। "वह [मसीह] जो परमेश्वर से जन्मा है, उसे [विश्वासी को] बचाता है, और दुष्ट उसे छू नहीं पाता।"

पहले तो, शैतान परमेश्वर की अनुमति के बिना किसी भी विश्वासी को छू नहीं सकता। जब भी शैतान हम पर हमला करता है, तो हम निश्चिंत हो सकते हैं कि परमेश्वर ने उसे अनुमति दी है। और
अगर परमेश्वर ने उसे अनुमति दी है, तो वह हमें भी उस पर विजय पाने की शक्ति देगा, क्योंकि परमेश्वर हमें कभी भी हमारी क्षमता से परे किसी परिक्षण की अनुमति नहीं देगा।

अनुप्रयोग
अपने उन परिचित लोगों के लिए प्रार्थना करें जो उस दुष्ट के वश में हैं, और उनकी भेंट परमेश्वर से करवाने का कुछ प्रयास करें।

23. मसीह के विरोधी की आत्मा अब भी जगत में मौजूद है **दिन 23**

1 यूहन्ना: 4 :1-3

हे प्रियों, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: वरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।
2 परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो, कि जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है।
3 और जो कोई आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह के विरोधी की आत्मा है; जिस की चर्चा तुम सुन चुके हो, कि वह आने वाला है: और अब भी जगत में है।

जो मसीही पवित्र शास्त्र से अच्छी तरह परिचित हैं, वे उन लोगों में अंतर जानते हैं जो प्रेरितों के अनुसार सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं और उन लोगों में भी जो उनका खंडन करते हैं।

झूठे शिक्षक संसार के बारे में अपने उसूलों और रुचियों के अनुसार बोलते हैं ताकि सांसारिक लोगों को ठेस न पहुंचे। संसार ने उन्हें स्वीकार किया, उन्होंने तेजी से प्रगति की, और उनके जैसे कई अनुयायी बन गए; संसार अपने लोगों से प्रेम करेगा, और उसके अपने लोग उससे प्रेम करेंगे।

अनुप्रयोग
आपके आस-पास ऐसी कौन सी झूठी शिक्षाएँ चल रही हैं? आप वचनो के द्वारा से इसका खंडन कैसे कर सकते हैं?

24. इस संसार की आदि आध्यात्मिक शक्तियां **दिन 24**

कुलुस्सियों: 2 :8,20
8 चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न करे ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार हैं, पर मसीह के अनुसार नहीं।
20 जब कि तुम मसीह के साथ संसार की आदि शिक्षा की ओर से मर गए हो, तो फिर उन के समान जो संसार में जीवन बिताते हैं मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षानुसार

झूठे शिक्षकों के लिए लोगों को अपने झांसे में फंसा लेना कैसे संभव होता है**?** इसका उत्तर सरल है**:** जो "बंदी बनाये गए हैं लोग हैं" ये

परमेश्वर के वचन के सत्य से अज्ञान हैं। वे झूठे शिक्षकों के तत्त्वज्ञान और खोखले भ्रम से मोहित हो जाते हैं।

अधिक महत्वपूर्ण क्या है **,** मनुष्य द्वारा बनाई गई परंपराएँ या परमेश्वर द्वारा दिए गए पवित्र शास्त्र के सिद्धांत**?** हमारी संगति में क्या प्रमुख है**?**

हमारी संगति में आने वाला कोई नया व्यक्ति, क्या कलीसिया को परमेश्वर की आत्मा द्वारा संचालित होते हुए देखेगा या आदि शिक्षाओं के शक्तियों को या फिर मनुष्यों द्वारा स्थापित परम्पराओं को**?**

अनुप्रयोग
इस संसार की कुछ **आदि शिक्षाओं की** शक्तियाँ क्या हैं जो परमेश्वर के वचन का खंडन करती हैं?

25. संसार के अनुसार युद्ध मत लड़ो — दिन 25

2 कुरिन्थियों: 10:3-5
3 क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते।
4 क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।
5 सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

बहुत से विश्वासियों को आज यह एहसास नहीं है कि कलीसिया एक युद्ध में शामिल है, और जो लोग मसीही युद्ध की गंभीरता को समझते हैं, वे अक्सर यह नहीं जानते कि युद्ध कैसे लड़ी जाए। वे शैतानी ताकतों को हराने के लिए मानवीय तरीकों का इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं, और ये तरीके असफल होने के लिए ही हैं।

क्या हम उन तर्कों और हर दिखावे को ध्वस्त करने में खुद को शामिल करते हैं जो परमेश्वर के ज्ञान के खिलाफ खड़े होते हैं**?**

अनुप्रयोग
ऐसे कौन से विचार हैं जो हमें मसीह के प्रति आज्ञाकारी बनने के लिए संघर्ष करने पर मजबूर करते हैं?

26. इस संसार के तौर-तरीकों का अनुसरण मत करो । — दिन 26

इफिसियों: 2:1-3
और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।
2 जिन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है।
3 इन में हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।

जो अविश्वासी है वह बीमार नहीं है**;** वह मर चुका है**!** उसे पुनर्जीवन की आवश्यकता नहीं है**;** उसे पुनरुत्थान की आवश्यकता है। सभी खोए हुए पापी मर चुके हैं, और एक पापी और दूसरे पापी के बीच एकमात्र अंतर सड़न की स्थिति का अंतर है।

एक शव दूसरे शव से अधिक मृत नहीं हो सकती**!** इसका मतलब यह है कि हमारी दुनिया एक विशाल कब्रिस्तान है, जो ऐसे लोगों से भरा हुआ है जो जीवित रहते हुए भी मृत हैं। हम भी उनमें से एक थे, लेकिन हम पुनर्जीवित हो गए।

अनुप्रयोग
क्या लोग देख पाते है की हम मसीह के लिए पुनर्जीवित हुए हैं? हमें अपने अंदर क्या बदलाव करने की ज़रूरत है ताकि लोग हमें पुनर्जीवित रूप में देख सकें?

27. हमारा यह मल्लयुद्ध इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से । **दिन 27**

इफिसियों: 6:10-12

10 निदान, प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।
11 परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको।
12 क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारा युद्ध मनुष्यों के खिलाफ नहीं है। यह आत्मिक शक्तियों के खिलाफ है। हम मनुष्यों के साथ लड़ने में अपना समय व्यर्थ कर रहे हैं, जबकि हमे उस शैतान से लड़ना है जो लोगों को नियंत्रित करना चाहता है और उन्हें परमेश्वर के काम का विरोध करने के लिए मजबूर करता है ।

चूंकि हम संसार में दुष्टता की आत्मिक सेनाओं के विरुद्ध लड़ रहे हैं, इसलिए हमें आक्रमण और बचाव दोनों के लिए विशेष उपकरणों की आवश्यकता है। परमेवश्वर ने हमारे लिए "संपूर्ण कवच" प्रदान किया है, और हमे अपने किसी भी हिस्से को इस कवच से वंचित रखने का दुस्साहस नहीं करना है । शैतान उस असुरक्षित क्षेत्र की ताक में लगा रहता है ।

अनुप्रयोग
इफिसियों 6 में : 13-18 का अध्यन्न करें और देखें कि क्या हमारी आध्यात्मिक यात्रा में कोई असुरक्षित क्षेत्र है?

28. संसार भर में, विश्वासियों के परिवार पीड़ित हैं । **दिन 28**

1 पतरस: 5:8-10

8 सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए।
9 विश्वास में दृढ़ हो कर, और यह जान कर उसका साम्हना करो, कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दुख भुगत रहे हैं।

हम अपने आध्यात्मिक युद्ध में कभी अकेले नहीं हैं। यीशु में हमारे भाई-बहनों ने भी यही लड़ाई लड़ी है और लड़ रहे हैं। सर्प के रूप में, शैतान धोखा देता है, और शेर के रूप में शैतान फाड़ के खा जाता है।

शैतान एक खतरनाक शत्रु है। वह एक सर्प है जो हमें तब डस सकता है जब हमें इसकी उम्मीद ही नहीं होती।। उसके पास बहुत सामर्थ और बुद्धिमत्ता है, और उसके पास बहुत सारे दुष्टात्माएँ हैं जो परमेश्वर के लोगों के खिलाफ़ उसके हमलों में उसकी मदद करते हैं।

हमें सतर्क रहने की आवश्यकता है, और शांत मन से, विश्वास में दृढ़ रहकर उसका विरोध करना चाहिए।

अनुप्रयोग
उन दिनों को याद करें जब शैतान ने आपको फाड़ खाने की कोशिश की थी और हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर की प्रशंसा करें।

29. सुसमाचार पूरे जगत में फलवन्त हो रहा है । दिन 29

कुलुस्सियों: 1:6
6 जो तुम्हारे पास पहुंचा है और जैसा जगत में भी फल लाता, और बढ़ता जाता है; अर्थात जिस दिन से तुम ने उस को सुना, और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहिचाना है, तुम में भी ऐसा ही करता है।

ईसाई शब्दावली में दो शब्दों को अक्सर भ्रमित किया जाता हैं: अनुग्रह और दया। परमेश्वर अपनी अनुग्रह से मुझे वह देता है जिसका मैं हकदार नहीं हूँ। फिर भी परमेश्वर अपनी दया से मुझे वह नहीं देता जिसका मैं हकदार हूँ।

अनुग्रह परमेश्वर का उपहार है जो अयोग्य पापियों को दिया जाता है। सुसमाचार का शुभ सन्देश होने का कारण अनुग्रह है: परमेश्वर उन सभी को बचाने के लिए इच्छुक और सक्षम है जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं।

हमें सतर्क रहने की आवश्यकता है, और शांत मन से, विश्वास में दृढ़ रहकर उसका विरोध करना चाहिए।

उनका सुसमाचार संसार भर में फलवन्त हो रहा है।

अनुप्रयोग
उन सभी समयों के बारे में सोचें जब सुसमाचार से आपका जीवन फलवन्त हुआ और उन्हें याद करके परमेश्वर को धन्यवाद दें।

30. तुम जगत की ज्योति हो । दिन 30

कुलुस्सियों: 1:6
14 तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता।
15 और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है।
16 उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें॥

"जगत की ज्योति होने का अर्थ है कि हम केवल ज्योति प्राप्त करने वाले ही नहीं, बल्कि ज्योति देने वाले भी हैं। हमें केवल अपने बारे में ही नहीं, बल्कि दूसरों की चिंता भी करनी चाहिए, और हमे केवल अपने लिए ही नहीं जीना है; हमारे पास कोई ऐसा होना चाहिए जिसे हम अपना प्रकाश दिखा सकें — और वो भी प्रेमपूर्वक।"

"ज्योति का उद्देश्य रोशनी देना और जो कुछ वहां है उसे प्रकट करना होता है। इसलिए ज्योति का प्रकट होना आवश्यक है – यदि उसे टोकरी के नीचे छिपा दिया जाए, तो फिर वह किसी काम का नहीं रहता ।"

अनुप्रयोग
"यह जानकर कि बहुत से लोग हमारे अच्छे कार्यों को देखकर स्वर्गीय परमेश्वर की महिमा करते हैं, हमें कितनी अधिक मेहनत करनी चाहिए अच्छे कार्यों को करने में? आप दूसरों के लिए कौन-कौन से अच्छे कार्य कर रहे हैं या कर सकते हैं? प्रभु में आपका परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता।"